बहुव्रीहि समास प्रकरण –

सू०सं० 975 – उद्विभ्यां काकुदस्य 5/4/148

यह विधिसूत्र है। 'समासान्ताः' के अधिकार क्षेत्र में आता है। सूत्र का अर्थ है – यदि 'उत्' और 'वि' उपसर्ग के परे 'काकुद' का बहुव्रीहि समास होता है तो 'काकुद' के अन्तिम 'अकार' का लोप हो जाता है। यथा – उत्काकुत् – उद्गतं काकुदं यस्य (अर्थात् जिसका तालु उन्नत हो।)।
'बहुव्रीहौ सप्तम्यर्थयोः' सूत्रानुसार 'उत्' उपसर्ग के साथ 'काकुद' शब्द का समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' से विभक्ति का लोप होकर उत् + काकुद बना, 'उद्विभ्यां काकुदस्य' सूत्र से 'काकुद' के अन्त्य अकार का लोप होकर 'उत्काकुत्' सिद्ध हुआ।

(b) विकाकुत् – विगतं काकुदं यस्य – Same as 'उत्काकुत्'

976 – पूर्णाद् विभाषा – 5/4/149

यह विधिसूत्र है। यह वैकल्पिक या विभाषा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है – यदि 'पूर्ण' शब्द के परे 'काकुद' शब्द का बहुव्रीहि समास होता है तो 'उद्विभ्यां काकुदस्य' सूत्र द्वारा अन्त्य अकार का लोप ~~विक~~ वैकल्पिक हो जाता है।

यथा – पूर्णकाकुत् – 'पूर्णं काकुदं यस्य' इसमें बहुव्रीहि समास और प्रातिपदिकादि कार्य होकर 'पूर्ण काकुद' शब्द बनता है और इस सूत्र से 'काकुद' के अकार का विकल्प से लोप होकर 'पूर्णकाकुत्' रूप बनता है।

और जहाँ अकार के लोप का अभाव होता है – वहाँ 'पूर्णकाकुद' शब्द से स्वादि (सु+आदि) कार्य होकर "पूर्णकाकुदः" रूप सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

977 - सुहृद् दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ।5।4।150 - यह विधिसूत्र है।
सूत्र का अर्थ है - बहुव्रीहि समास में यदि 'सु' और 'दुर्' से परे 'हृदय' शब्द आए तो और 'सु' का अर्थ मित्र एवं 'दुर्' का अर्थ 'शत्रु' हो तो 'हृदय' शब्द का निपातन से हृद् हो जाता है।

यथा - सुहृद् - लौ० वि० शोभनं हृदयं यस्य, अलौ० वि० - सु+हृदय+सु।

'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्रानुसार सु का 'हृदय' पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। 'सुपो ~~धातु प्राति~~ धातुप्रातिपदिकयोः' से विभक्ति का लोप होकर 'सुहृदय' बना। सुहृद् दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः सूत्रानुसार 'हृदय' का निपातनात 'हृद्' बनकर 'सुहृद्' रूप सिद्ध हुआ।

दुर्हृद् - लौकिक विग्रह दुष्टं हृदयं यस्य स - अ० विग्रह - दुर् + हृदय + सु।

Same as 'सुहृद्'

988. 'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' 5।4।151

यह विधिसूत्र है। यहाँ 'बहुव्रीहौ' सूत्र की अनुवृत्ति होती है। सूत्र का अर्थ है बहुव्रीहि समास में 'उरस्' आदि शब्दों से समासान्त 'कप्' (क) प्रत्यय होता है। (उरस् आदि गण हैं, जिनमें उरस्, सर्पिस्, उपानह एवं पुमान् आदि शब्द आते हैं)
यथा - व्यूढम् उरः (जिसका वक्षस्थल विशाल हो।)

Scanned with CamScanner